ISBN: 978-93-5890-323-2

रसिन (चित्रकूट) के बीरबल 'अवसेरी' की रोचक लोक गाथाएँ

डॉ. राजीव अग्रवाल
अभिषेक ओझा

रसिन (चित्रकूट) के बीरबल 'अवसेरी' की रोचक लोक गाथाएँ

डॉ. राजीव अग्रवाल

डीन–शिक्षा संकाय

बुन्देलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

अभिषेक ओझा

M.A. (English), M.Ed.

रसिन (चित्रकूट) के बीरबल 'अवसेरी' की रोचक लोक गाथाएँ

डॉ. राजीव अग्रवाल

अभिषेक ओझा

©सर्वाधिकार सुरक्षित

E-Book: संस्करण: अप्रैल, 2026

मूल्य: RS 49

ISBN: 978-93-5890-323-2

प्रकाशक:

अभिषेक ओझा
फलगो चौरिहा का पुरवा, अतर्रा ग्रामीण,
बाँदा- 210201
(उत्तर प्रदेश)

मो. – **6306627341**
E-mail: mr.abhiojha@gmail.com

प्राक्कथन

बुंदेली लोक-चेतना के संवाहक 'अवसेरी': वाक्-वैदग्ध्य, समाज-मनोविज्ञान एवं सांस्कृतिक यथार्थ

उपोद्घात

बुंदेलखंड की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वसुंधरा न केवल शौर्य और पराक्रम की जननी रही है, वरन यह लोक-साहित्य, लोक-व्यवहार और विलक्षण लोक-चरित्रों का भी एक समृद्ध अक्षय कोष रही है। चित्रकूट जनपद के ऐतिहासिक ग्राम 'रसिन' की माटी से उद्भूत एक ऐसा ही कालजयी, स्मरणीय और लोक-मानस में गहरे पैठा हुआ चरित्र है— '**अवसेरी**'।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित अवसेरी के जीवन से जुड़े ये बारह आख्यान केवल सतही हास्य-विनोद के कौतुक मात्र नहीं हैं, अपितु ये तत्कालीन ग्रामीण समाज की संरचना, मानव-मनोविज्ञान के अंतर्विरोधों, लोक-संस्कृति की मर्यादाओं और बुंदेली वाक्-वैदग्ध्य के जीवंत ऐतिहासिक दस्तावेज़ हैं। अवसेरी का चरित्र 'प्रत्युत्पन्नमति' (तुरंत सटीक निर्णय लेने की कला) और कुशाग्र व्यावहारिक चेतना का वह शिखर है, जो जटिल से जटिल सामाजिक विसंगतियों को भी अपने बौद्धिक चातुर्य से तात्कालिक समाधान की ओर मोड़ देता है।

आख्यानों का साहित्यिक एवं विषयगत वर्गीकरण

1. व्यावहारिक बुद्धि एवं कौटिल्य-नीति

- **'बर्तनों का बच्चा' एवं 'न हींग लगी न फिटकरी'**: ये कथाएँ अवसेरी की उस तीक्ष्ण व्यावहारिक बुद्धि को रेखांकित करती हैं, जहाँ वह समाज में व्याप्त लोभ, स्वार्थ और चालाकी का उत्तर उन्हीं के तर्कों से देता है। "बर्तन के प्रसव और उसकी मृत्यु" का मिथक लोक-मानस में 'जैसे को तैसा' के सिद्धांत को बड़े ही सहज ढंग से प्रतिपादित करता है।
- **'मटकी का रहस्य'**: यह प्रसंग कामुकता और गणिका-लोभ के अंतर्संबंधों पर करारा प्रहार है, जहाँ अवसेरी बाह्य चकाचौंध (ऊपर जमी घी की परत) के नीचे छिपी यथार्थ की मिट्टी से सामने वाले के लालच को निरुत्तर कर देता है।

2. लोक-न्याय और जन-मनोविज्ञान

- **'बतासे का न्याय'**: एक बाह्य राहगीर के अहम् को संतुष्ट करने और उसे लोक-मर्यादा का पाठ पढ़ाने के लिए अवसेरी ने जिस प्रकार बाल-मनोविज्ञान (बतासे का लोभ) का आश्रय लेकर पंचायत को चमत्कृत किया, वह यह सिद्ध करता है कि लोक-अदालतों में न्याय शुष्क तर्कों से नहीं, बल्कि तात्कालिक व्यावहारिक कौशल से निर्मित होता था।
- **'सबके पेट होते हैं'**: सामाजिक उपेक्षा (निमंत्रण-पत्र से नाम छूटना) से उपजे विक्षोभ को अवसेरी ने जिस शाब्दिक वाक-जाल से प्रतिशोध में बदला और अंततः "सबके पेट होते हैं"

जैसा सार्वभौमिक, अकाट्य शारीरिक सत्य कहकर बारात को वापस लौटाया, वह उनके भाषाई एकाधिकार और जन-संवाद की दक्षता का चरमोत्कर्ष है।

3. अमर्यादित हास्य और सामाजिक त्रासदी

- **'मजाक की भारी कीमत':** यह आख्यान संपूर्ण संकलन का सबसे गंभीर और मार्मिक पक्ष है। यह हास्य के उस स्याह और डरावने मोड़ को उजागर करता है, जहाँ एक अनियंत्रित, अमर्यादित और कुत्सित उपहास (भाई-बहन का प्रसंग) पारिवारिक शुचिता को खंडित कर एक स्त्री की आत्मबलिदान जैसी आत्मघाती त्रासदी का कारण बन जाता है। यह अवसेरी के चरित्र के पश्चाताप और आत्म-ग्लानि वाले गंभीर पक्ष को भी उद्घाटित करता है।
- **'अवसेरी और भोर का संवाद' एवं 'निराला स्नान':** ये प्रसंग ग्रामीण अंचल की लोक-लाज, स्त्री-पुरुष संवाद की मर्यादाओं और उन मर्यादाओं के उल्लंघन से उत्पन्न होने वाले तात्कालिक अवरोधों को साहित्यिक कौतुक के साथ प्रस्तुत करते हैं।

4. आध्यात्मिक विरक्ति एवं अडिग निष्ठा

- **'आस्था की जीत':** यह कथा अवसेरी के केवल एक विदूषक या चतुर संसारी होने के भ्रम को समूल नष्ट करती है। केदारनाथ की दुर्गम यात्रा में शारीरिक अक्षमता के उपरांत भी उनकी निश्चल, हठयोग जैसी भक्ति और महादेव का साक्षात स्वप्न-दर्शन पाना, उनके चरित्र के अंतर्निहित आध्यात्मिक, सात्विक और पावन पक्ष को गरिमा प्रदान करता है।
- **'मंदिर की छत पर ऊँट' एवं 'कुआँ संदेश':** अभिजात्य कला-अहंकार (नर्तकी का गर्व) को अपनी युक्ति से विगलित करना तथा समाज के अनवरत, पिष्टपेषण प्रश्नों से व्यग्र होकर कुएँ में जंजीर के सहारे लटककर समष्टि को एकमुश्त "एक सौ दस का लाया हूँ" का संदेश देना, उनकी अनूठी 'प्रतिरोध कला' को दर्शाता है।

उपसंहार

निष्कर्षतः, अवसेरी का चरित्र बुंदेली लोक-चेतना का वह स्वच्छ दर्पण है जिसमें बुद्धिमत्ता, हास्य, व्यंग्य, निश्छलता और सामाजिक सजगता के सतरंगी रंग एक साथ आलोकित होते हैं। यह पुस्तक इन विस्मृत होती लोक-कथाओं, वाचिक परंपराओं को लिपिबद्ध कर सहेजने और अवसेरी के विदूषक से लोक-नायक बनने की इस यात्रा को अकादमिक एवं साहित्यिक पटल पर स्थापित करने का एक महती एवं स्तुत्य प्रयास है।

"**वचने किं दरिद्रता**" और "**बुद्धिर्यस्य बलं तस्य**"— इन दोनों सूक्तियों के समन्वय के जीवंत विग्रह साक्षात अवसेरी ही हैं।

- डॉ. राजीव अग्रवाल

- अभिषेक ओझा

विषय सूची

क्र. सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1	बर्तनों का बच्चा	1-4
2	बतासे का न्याय	2-8
3	मज़ाक की भारी कीमत	9-12
4	मंदिर की छत पर ऊँट	13-16
5	सबके पेट होते हैं	17-20
6	आस्था की जीत	21-23
7	न हींग लगी, न फिटकरी	24-26
8	अवसेरी का कुआँ संदेश	27-29
9	चुप्पा से दुहना और ठाठ से खाना	30-31
10	अवसेरी का विवाह और विलक्षण स्नान	32-34
11	अवसेरी और भोर का संवाद	35-37
12	मटकी का रहस्य	38-41

1. बर्तनों का बच्चा

चित्रकूट की पावन धरा पर स्थित **रसिन** नामक ग्राम में **अवसेरी** नाम का एक कृषक निवास करता था। अवसेरी का व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक था; वह न केवल कृषि कार्य में निपुण था, बल्कि मल्लयुद्ध (पहलवानी) का भी शौकीन था। उसके घर में संतान का अभाव था, किंतु उसका हृदय इतना विशाल और स्वभाव इतना मिलनसार था कि संपूर्ण ग्राम ही उसका परिवार बन गया था। गाँव के प्रत्येक उत्सव में उसकी उपस्थिति अनिवार्य थी और वह भी निस्वार्थ भाव से सेवा कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता था।

प्रथम भोज और 'बर्तनों का वंश'

समय बीतता गया। अक्सर दूसरों के यहाँ भोजन करने के कारण गाँव वालों ने परिहास में उसे उलाहना देना प्रारंभ किया, "अवसेरी भाई! तुम सदैव दूसरों के निमंत्रण का आनंद लेते हो, कभी हमें भी अपने हाथ का स्वाद चखाओ।"

अवसेरी ने पहले तो इसे टालना चाहा, किंतु निरंतर दबाव के बाद उसने एक भव्य भोज का आयोजन किया। ग्रामीण परंपरा के अनुसार, उसने पड़ोसियों से बड़े-बड़े बर्तन और अन्य सामग्री एकत्र की। भोज अत्यंत आनंददायक रहा। परंतु, असली कौतुक तब हुआ जब अवसेरी बर्तन लौटाने गया। उसने प्रत्येक बड़े पात्र के साथ एक लघु पात्र (छोटा बर्तन) भी रख दिया।

जब चकित ग्रामीणों ने पूछा, "भाई! हमने तो तुम्हें केवल बड़ा पात्र दिया था, यह छोटा

पात्र किसका है?"

तब अवसेरी ने बड़ी सहजता और मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "**भैया, यह छोटा बर्तन आपके बड़े बर्तन की संतान है। मेरे घर रहते हुए इसने जन्म लिया है, अतः इस पर आपका ही अधिकार है।"**

भोले ग्रामीणों ने प्रसन्नतापूर्वक उस तर्क को स्वीकार कर लिया और मुफ्त में मिले बर्तन पाकर अवसेरी की जय-जयकार करने लगे।

द्वितीय भोज और नियति का चक्र

कुछ वर्षों के पश्चात, ग्रामीणों की जिह्वा ने पुनः उस स्वाद की अभिलाषा की। अवसेरी ने एक बार फिर सहर्ष निमंत्रण स्वीकार किया। इस बार ग्रामीणों का लोभ जागृत हो चुका था। उन्होंने 'बर्तनों की वंश-वृद्धि' की आशा में उत्साहपूर्वक दुगुने बर्तन और बहुमूल्य सामग्री अवसेरी को सौंप दी।

अवसेरी ने गाँव के **भोंदू कलार** नामक व्यक्ति के पास उन सभी बर्तनों को गिरवी रख दिया और प्राप्त धन से घी, तेल, शर्करा एवं अन्य उत्तम सामग्रियाँ क्रय कीं। पूरे गाँव ने तृप्ति पूर्वक भोजन किया और अवसेरी की प्रबंधन क्षमता की प्रशंसा की।

महतारी और बच्चे का देहावसान

भोज समाप्त हुए सप्ताह बीते, फिर मास बीत गए, किंतु अवसेरी बर्तन लौटाने नहीं आया। अंततः, धैर्य खोकर जब ग्रामीण उसके द्वार पर पहुँचे और अपने बर्तनों की मांग की, तो अवसेरी का मुख मंडल विषाद से भर गया।

उसने लंबी आह भरते हुए कहा, "**मित्रों! बड़ा अनर्थ हो गया। इस बार गाँव में ऐसी भीषण व्याधि (रोग) आई कि आपके बर्तनों की माताएँ और उनके नवजात बच्चे, सभी अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गए।**"

ग्रामीण अवाक रह गए। उन्होंने क्रोधित होकर तर्क दिया, "यह कैसे संभव है? निर्जीव बर्तन भला कैसे मर सकते हैं?"

अवसेरी ने शांत भाव से तर्क की उसी कसौटी का प्रयोग किया जो उसने पिछली बार गढ़ी थी। उसने कहा, "**भैया, यदि बर्तन संतान को जन्म दे सकते हैं, तो मृत्यु का वरण भी कर सकते हैं। जो जन्म लेता है, उसका अंत निश्चित है।**"

सत्य का उद्घाटन

ग्रामीणों को अब अपनी भूल और अवसेरी की धूर्तता का आभास हुआ। जब उन्होंने अनुनय-विनय की, तब अवसेरी ने यथार्थ से पर्दा उठाया, "सज्जनों! वह भोजन सामग्री

कहीं आकाश से नहीं आई थी। आपके बर्तन भोंदू कलार के पास सुरक्षित हैं, वे सब आपके उदर (पेट) में जा चुके हैं। यदि बर्तनों से मोह है, तो कलार के पास जाकर उन्हें मुक्त करा लीजिए।"

अंततः, ग्रामीणों को अपने ही बर्तन स्वयं मूल्य चुकाकर वापस लाने पड़े। उस दिन के पश्चात, रसिन ग्राम में कभी किसी ने अवसेरी से भोज लेने की धृष्टता नहीं की।

सीख: *अत्यधिक लोभ बुद्धि को भ्रमित कर देता है, और चालाक व्यक्ति उसी लोभ को अस्त्र बनाकर आपको परास्त कर सकता है।*

2. बतासे का न्याय

चित्रकूट जनपद के **रसिन** ग्राम का निवासी **अवसेरी** न केवल एक साधारण कृषक था, बल्कि वह अपनी तीव्र बुद्धि और हास्य-विनोद के लिए समूचे क्षेत्र में विख्यात था। वह युग संचार के आधुनिक साधनों से वंचित था; तब अश्व ही आवागमन और प्रतिष्ठा के मुख्य साधन हुआ करते थे। अवसेरी के पास भी 'ग्वेद' नाम की एक देशी घोड़ी थी।

व्यंग्य और चुनौती

एक प्रभात काल में, जब अवसेरी ग्राम की सीमा पर अपनी घोड़ी के लिए घास काट रहा था, तभी वहाँ से एक प्रवासी दंपत्ति का गुजरना हुआ। पुरुष आगे चल रहा था और उसकी पत्नी गोद में बालक को लिए उसके पीछे-पीछे थी। चलते-चलते पुरुष ने उपहास के स्वर में अपनी पत्नी से कहा, *"प्रिये! लोग कहते हैं कि रसिन गाँव के निवासी बड़े परिहास प्रेमी और चतुर होते हैं, किंतु हम तो पूरा गाँव पार कर आए और किसी ने हमसे एक छोटा सा मजाक तक नहीं किया।"*

अवसेरी के कानों में जब ये शब्द पड़े, तो उसके भीतर का विनोदी स्वभाव जागृत हो उठा। उसने मन ही मन संकल्प किया कि इन पथिकों को रसिन की विनोदिता का रसास्वादन अवश्य कराया जाए।

बतासे का प्रपंच

अवसेरी ने तत्काल अपना कार्य छोड़ा और दौड़कर पास ही की एक दुकान से कुछ बतासे क्रय किए। वह चुपके से उस परिवार के पीछे हो लिया। बालक अपने पिता के कंधे पर बैठा था और उसका मुख पीछे की ओर था। अवसेरी ने अत्यंत चतुराई से एक-एक कर बालक को बतासे खिलाना प्रारंभ किया। बालक मधुर बतासों के लोभ में अवसेरी से हिल-मिल गया। इस प्रकार, बतासे खिलाते-खिलाते वे एक कोस दूर स्थित **सुदिनपुर** ग्राम जा पहुँचे।

न्याय की वेदी पर

जैसे ही वे सुदिनपुर के मध्य पहुँचे, अवसेरी ने अचानक उच्च स्वर में विलाप और शोर मचाना शुरू कर दिया, *"भाइयों देखो! अनर्थ हो गया! यह दुष्ट पुरुष मेरी पत्नी और*

बालक को भगाकर लिए जा रहा है!"

क्षण भर में वहाँ जनसमूह एकत्र हो गया और पंचायत बैठ गई। पंचों ने आगंतुक पुरुष से प्रश्न किया, तो वह सकपका कर बोला, *"महानुभावों! यह स्त्री मेरी धर्मपत्नी है और यह मेरा पुत्र है। यह व्यक्ति असत्य वाचन कर रहा है।"*

स्त्री ने भी भयभीत स्वर में अपने वास्तविक पति का ही पक्ष लिया। किंतु अवसेरी ने अभिनय की पराकाष्ठा करते हुए अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा, *"हे प्रिये! क्षणिक मनमुटाव के कारण तुम अपने वास्तविक पति को त्याग कर इस पराये पुरुष का साथ दे रही हो?*

पञ्च परमेश्वर! मैं लुट गया, मेरा घर उजड़ गया, अब आप ही न्याय करें।" अवसेरी का विलाप इतना मर्मस्पर्शी था कि पंच भी असमंजस में पड़ गए।

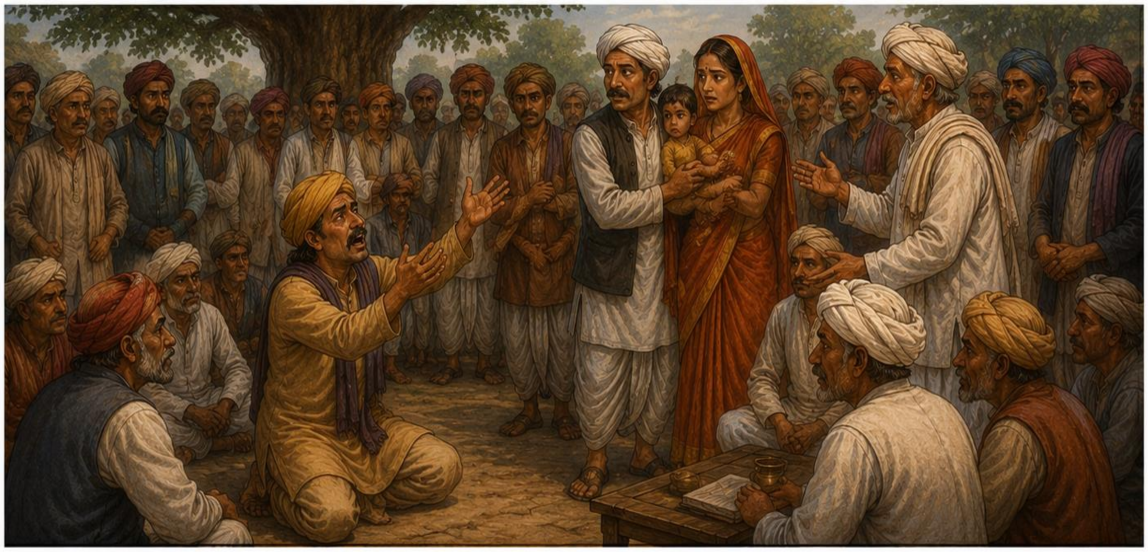

बालक का निर्णय

अंततः पंचों ने यह निर्णय लिया कि '**मनुष्य असत्य बोल सकता है, किंतु एक अबोध बालक कभी छल नहीं करता।**' सत्य की परीक्षा के लिए बालक को मध्य में खड़ा किया गया और दोनों पक्षों को विपरीत दिशाओं में बैठा दिया गया। आदेश हुआ कि बालक स्वयं अपने पिता का चयन करे।

अवसेरी ने अवसर देखते ही अपनी हथेली में छिपा हुआ बतासा बालक को संकेत से दिखा दिया। मधुर स्वाद की स्मृति में डूबा बालक झट से दौड़कर अवसेरी की गोद में जा बैठा। पंचों ने तत्काल अपना निर्णय सुना दिया—बालक अवसेरी का है, अतः स्त्री भी उसी की है।

सत्य का बोध

असली पति-पत्नी के पैरों तले जमीन खिसक गई। वे रुदन करने लगे और अवसेरी के समक्ष हाथ जोड़कर याचना करने लगे। जब अवसेरी ने देखा कि उन पथिकों को अपनी भूल का आभास हो गया है, तो उसने मुस्कराते हुए कहा:

"सज्जनों! व्यथित न हों। अपना बालक और अपनी पत्नी ससम्मान ले जाइए। बस भविष्य में कभी यह मत कहना कि रसिन गाँव के लोग मजाक करना नहीं जानते। यह केवल एक पाठ था ताकि आप हमारी मेधा का सम्मान करना सीखें।"

दंपत्ति अवसेरी की विलक्षण बुद्धि के कायल हो गए और रसिन की चतुराई का गुणगान करते हुए अपने मार्ग पर बढ़ गए।

सीख: *प्रत्युत्पन्नमति और चतुराई से कठिन से कठिन परिस्थिति को भी अपने पक्ष में मोड़ा जा सकता है, किंतु उसका प्रयोग केवल अहंकार को तोड़ने के लिए होना चाहिए, किसी का अहित करने के लिए नहीं।*

3. मजाक की भारी कीमत

चित्रकूट के रसिन ग्राम का निवासी **अवसेरी** अपनी प्रत्युत्पन्नमति और हास्य-विनोद के लिए विख्यात था। उसकी चतुराई के किस्से केवल गाँव तक सीमित न थे, अपितु दूर-दराज के क्षेत्रों में भी उसकी ख्याति थी। एक दिन उसकी पत्नी ने सहज भाव से एक आग्रह किया, "स्वामी, आप संपूर्ण संसार के साथ परिहास करते हैं, किंतु मेरे साथ कभी कोई ठिठोली नहीं की। क्या मैं आपके इस विनोदपूर्ण पक्ष से वंचित ही रहूँगी?"

अवसेरी ने पहले तो इसे अनसुना किया, किंतु पत्नी के बार-बार आग्रह करने पर उसने मंद मुस्कान के साथ कहा, "उचित है, अवसर आने पर तुम्हारी यह इच्छा भी पूर्ण होगी।"

षड्यंत्र का ताना-बाना

समय का चक्र बीता और अवसेरी की पत्नी इस बात को विस्मृत कर गई। एक दिन उसका भाई (अवसेरी का साला) अपनी बहन को लिवाने (मायके ले जाने) ससुराल आया। अतिथि का भव्य स्वागत हुआ। भोजनोपरांत जब दोनों पुरुष एकांत में बैठे, तो साले ने अवसेरी की दुर्बलता पर प्रश्न किया।

अवसेरी ने अवसर ताड़ लिया और एक मिथ्या कथा गढ़ी। उसने फुसफुसाते हुए कहा, "प्रिय अनुज, क्या बताऊँ? एक अदृश्य प्रेतनी ने मेरा जीवन दूभर कर रखा है। वह प्रतिदिन रात्रि में मुझे प्रताड़ित करती है और बलात् मेरे समीप सोने का प्रयास करती है।"

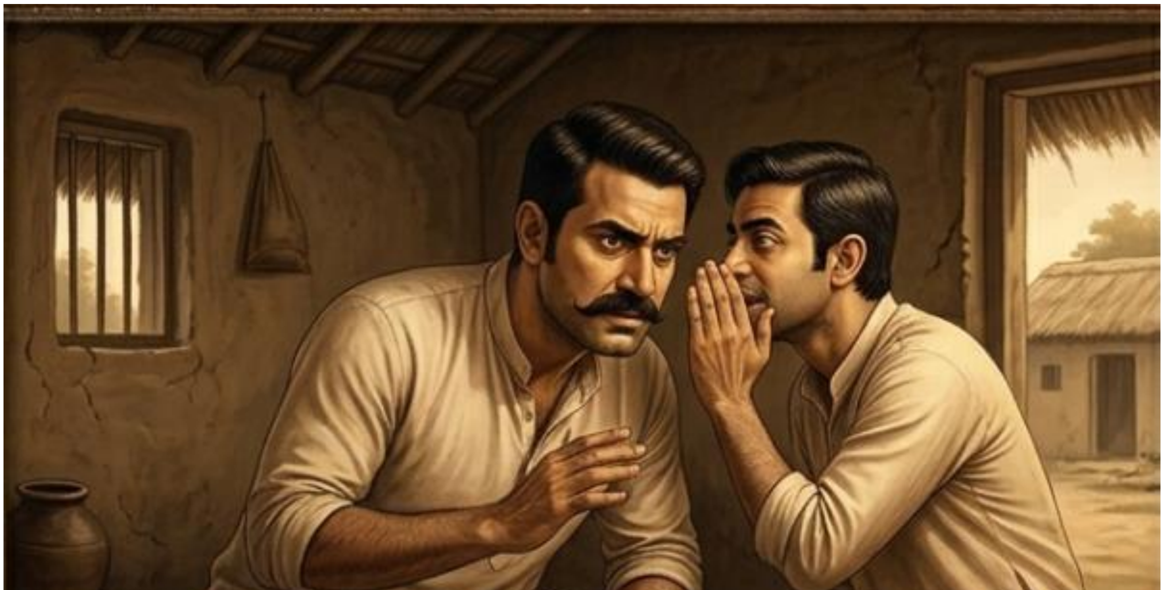

वीरता के मद में चूर पहलवान साले ने आव देखा न ताव और बोला, "जीजाजी, आप चिंता न करें। आज आपकी शय्या पर मैं विश्राम करूँगा। देखूँ तो सही, वह प्रेतनी मुझसे कैसे जीतती है!"

मर्यादा का उल्लंघन

रात्रि के गहन अंधकार में अवसेरी ने अपने साले को अपनी शय्या पर सुला दिया और स्वयं ओट में छिपकर प्रतीक्षा करने लगा। ग्रामीण परिवेश में स्त्रियाँ समस्त गृह-कार्य और चौका-बर्तन निपटाने के पश्चात ही विश्राम करती हैं। अवसेरी की पत्नी भी अगले दिन मायके जाने की तैयारी और कार्यों के कारण अत्यधिक थक चुकी थी।

अर्धरात्रि के समय, वह निस्तब्धता में अपने कक्ष में प्रविष्ट हुई। उसने देखा कि शय्या पर कोई चादर ओढ़कर सोया है। अपने पति की उपस्थिति मानकर, उसने श्रद्धावश उनके चरण दबाए और थकान के कारण समीप ही लेट गई।

यही वह क्षण था जिसका अवसेरी को प्रतीक्षारत था। वह अचानक अंधकार से प्रकट हुआ और ऊँचे स्वर में विलाप करने लगा, "अधर्म! अनर्थ! यह कैसा घोर कलयुग है? सगी बहन अपने भ्राता के समीप लेटी है! मैं तो लोक-परलोक कहीं का न रहा!"

उसके शोर से दोनों चौंककर उठे। जब चादर हटी, तो भाई और बहन एक-दूसरे को सम्मुख देख पाषाणवत जड़ हो गए। लज्जा और आत्मग्लानि से उनके प्राण सूखने लगे।

हास्य बना काल

दोनों को किंकर्तव्यविमूढ़ देखकर अवसेरी अट्टहास कर उठा और बोला, "प्रिय, तुम ही तो कहती थीं कि मैंने तुम्हारे साथ कभी मजाक नहीं किया। लो, आज मनोरंजन पूर्ण हुआ!"

सत्य का ज्ञान होने पर साला तो चुपचाप दूसरे कक्ष में चला गया, किंतु पत्नी के हृदय पर वज्रपात हो गया। उसने कातर स्वर में केवल इतना कहा, "स्वामी, क्या परिहास की सीमाएँ इतनी वीभत्स भी हो सकती हैं?"

यद्यपि यह एक मजाक था, किंतु भारतीय ग्रामीण संस्कृति और भ्राता-भगिनी के पवित्र संबंधों की मर्यादा पर लगे इस कल्पित कलंक को वह स्त्री सहन न कर सकी। वह स्वयं से, अपने भाई से और अपने पति से दृष्टि मिलाने योग्य न रही। उस रात उसकी आत्मा गहरे अवसाद के गर्त में डूब गई। मर्यादा के भंग होने की पीड़ा ने उसे भीतर से खोखला कर दिया।

अंततः, जब संसार निद्रा में मग्न था, उस साध्वी स्त्री ने लोक-लाज और इस क्रूर उपहास के बोझ से मुक्त होने के लिए घर के बाहर स्थित कूप (कुएं) में छलांग लगा दी।

निष्कर्ष: *यह कथा एक गंभीर चेतावनी देती है कि परिहास और अपमान के बीच एक अत्यंत सूक्ष्म रेखा होती है। जब विनोद मर्यादा की परिधि लांघकर किसी के आत्मसम्मान और पवित्र संबंधों पर आघात करता है, तो वह 'मजाक' नहीं, 'मानसिक क्रूरता' बन जाता है, जिसका अंत प्रायः विनाशकारी होता है।*

4. मंदिर की छत पर ऊँट

चित्रकूट के अंचल में स्थित एक समृद्ध रजवाड़ी ग्राम था, जहाँ प्राचीन सामंती वैभव की झलक आज भी शेष थी। एक समय वहाँ के ज़मींदार साहब, जिन्हें लोकभाषा में 'धतुरहा' कहा जाता था, के प्रांगण में एक भव्य उत्सव का आयोजन हुआ। उत्सव की शोभा बढ़ाने के लिए निकटवर्ती क्षेत्र फैजाबादपुर से कुशल नर्तकियों को आमंत्रित किया गया था।

तिरस्कार की टीस

चाँदनी रात में महफ़िल सजी। घुँघरुओं की झंकार और वाद्ययंत्रों की थाप पर नृत्य आरंभ हुआ। संपूर्ण ग्राम इस कलात्मक आयोजन का साक्षी बनने हेतु उमड़ पड़ा। उन्हीं दर्शकों के बीच **अवसेरी** भी उपस्थित था। दिन भर के कठिन परिश्रम के पश्चात वह अपने साधारण और मलिन वस्त्रों में ही महफ़िल के एक कोने में जाकर बैठ गया।

गाँव की परंपरा के अनुसार, जब कोई दर्शक नर्तकी की कला से मुग्ध होता, तो वह मुद्राएँ (पैसे) दिखाकर उसे अपने समीप बुलाता था। अवसेरी ने भी प्रसन्न होकर नर्तकी को पुरस्कार देना चाहा। किंतु, नर्तकी ने जब अवसेरी के साधारण रूप और मैले वस्त्रों को देखा, तो अहंकारवश उसे निर्धन समझकर उपेक्षित कर दिया। वह अन्य धनवानों के पास तो गई, पर अवसेरी के पास नहीं।

अवसेरी के स्वाभिमान पर यह गहरी चोट थी। उसने मन ही मन संकल्प लिया— *"हे अभिमानी! तूने आज मेरी साधारणता का उपहास किया है, शीघ्र ही तू मेरे पीछे-पीछे चलने पर विवश होगी।"*

विलक्षण युक्ति और मंदिर का शिखर

उस युग में आवागमन के लिए गज, अश्व और उष्ट्र (ऊँट) ही प्रमुख साधन थे। नर्तकियाँ ऊँटों पर सवार होकर आई थीं। प्रतिशोध की भावना से ओतप्रोत अवसेरी ने अपनी बुद्धि का पासा फेंका। मध्यरात्रि में जब महफ़िल अपने अवसान पर थी, अवसेरी ने कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर ग्राम के बाह्य छोर पर स्थित एक मंदिर के समीप 'पयार' (धान का पुआल) के भारी गट्ठरों का अंबार लगा दिया।

उसने चतुराई से उन गट्ठरों के माध्यम से मंदिर की छत तक एक कृत्रिम ढलान (Ramp) निर्मित की। फिर, बड़ी कुशलता से नर्तकी के ऊँट को उस ढलान के सहारे मंदिर की ऊँची छत पर चढ़ा दिया। कार्य पूर्ण होते ही उसने पयार के सारे गट्ठर हटा दिए। अब ऊँट बिना किसी मार्ग के आकाश छूते मंदिर के शिखर पर खड़ा था।

अहंकार का पतन और न्याय

प्रातःकाल जब उत्सव समाप्त हुआ, तो नर्तकी ने प्रस्थान हेतु अपने अनुचर से ऊँट लाने को कहा। ऊँट अपने स्थान से लुप्त था। जब खोजबीन हुई, तो दृश्य देखकर संपूर्ण ग्राम स्तब्ध रह गया— ऊँट मंदिर की निर्जन छत पर खड़ा था!

गाँव के वृद्धों ने तुरंत भाँप लिया कि यह असाधारण कृत्य केवल अवसेरी की प्रत्युत्पन्नमति (Quick wit) का ही परिणाम हो सकता है। अवसेरी को सभा में आहूत किया गया। उसने बिना किसी संकोच के नर्तकी द्वारा किए गए अपने अपमान की व्यथा सुनाई। जब नर्तकी से सत्य पूछा गया, तो उसने लज्जित होकर अपना दोष स्वीकार किया।

न्यायप्रिय ग्रामीणों ने अवसेरी के स्वाभिमान का पक्ष लिया। अवसेरी ने अपनी शर्त रखी, जिसे नर्तकी को स्वीकार करना पड़ा। उसने नर्तकी को यह बोध कराया कि कला किसी के वस्त्रों की उज्ज्वलता की नहीं, बल्कि हृदय की उदारता की ऋणी होती है। अंततः, अवसेरी ने पुनः उसी विधि से ढलान तैयार की और ऊँट को सुरक्षित नीचे उतारा।

नर्तकी अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर गई, किंतु उसका अहंकार उस मंदिर की छत पर ही छूट गया था। उस दिन के पश्चात उसने पुनः कभी किसी साधारण व्यक्ति का अनादर नहीं किया।

निष्कर्ष: *अवसेरी की यह कथा हमें स्मरण कराती है कि साधारण दिखने वाले व्यक्ति के भीतर भी असाधारण मेधा और आत्मसम्मान छिपा होता है, जिसे चुनौती देना घातक सिद्ध हो सकता है।*

5. सबके पेट होते हैं

चित्रकूट के ऐतिहासिक ग्राम **रसिन** में एक समय उल्लास का वातावरण था। ग्राम के प्रतिष्ठित ज़मींदार की पुत्री का शुभ विवाह निश्चित हुआ था। क्षेत्रीय परंपरा के अनुसार, संपूर्ण ग्राम को सामूहिक निमंत्रण दिया जाना था, जिसे स्थानीय भाषा में **'तदगरा'** कहा जाता था। पंडित जी सूची लेकर द्वार-द्वार अक्षत और निमंत्रण बाँट रहे थे, किंतु नियति की विडंबना देखिए कि उस सूची में ग्राम के सबसे विलक्षण व्यक्ति, **अवसेरी** का नाम अंकित होने से रह गया।

स्वाभिमानी अवसेरी को जब ज्ञात हुआ कि उसे इस मांगलिक उत्सव से वंचित रखा गया है, तो उसके आत्मसम्मान को गहरी चोट पहुँची। उसने निश्चय किया कि वह अपनी उपेक्षा का उत्तर अपनी बुद्धि के कौशल से देगा।

संकट के बीज और शब्दों का मायाजाल

विवाह की संध्या को जब बारात का आगमन होने वाला था, अवसेरी अपनी घोड़ी पर सवार होकर ग्राम की सीमा पर स्थित **बान गंगा** नदी के तट पर जा पहुँचा। वह वहाँ बैठकर शांति से घास छीलने का स्वांग करने लगा। नियमानुसार बारात नदी के तट पर विश्राम, स्नान और वस्त्रादि परिवर्तन के लिए रुकी।

जिज्ञासु बारातियों ने जब अवसेरी से परिचय पूछा, तो अवसेरी ने अत्यंत सहजता से प्रश्न किया, "सज्जनों, आप किसका आतिथ्य स्वीकार करने जा रहे हैं?"

बारातियों ने गर्व से ज़मींदार का नाम लिया। अवसेरी ने एक लंबी श्वास ली और कुटिल मुस्कान के साथ कहा, "**अच्छा! तो आप उसी कन्या के विवाह में जा रहे हैं, जिसके पेट है?**"

इतना सुनते ही बारातियों के मध्य सन्नाटा पसर गया। उस युग में 'पेट होना' एक अत्यंत गंभीर लांछन और अमर्यादित संकेत माना जाता था। देखते ही देखते यह कानाफूसी पूरी बारात में दावानल की भाँति फैल गई। लोक-लज्जा और कुल की प्रतिष्ठा के भय से भयभीत होकर बारातियों ने विवाह स्थल की ओर जाने के बजाए वापस लौटने का निर्णय ले लिया।

कुल की मर्यादा और अवसेरी का आह्वान

जब ज़मींदार को ज्ञात हुआ कि बारात द्वार से वापस लौट रही है, तो उनके पैरों तले धरती खिसक गई। ग्राम के प्रबुद्ध जन तुरंत बारात को मनाने पहुँचे। बड़ी अनुनय-विनय के पश्चात बारातियों ने उस कथित 'कलंक' का रहस्य खोला। जब इस दुष्प्रचार के स्रोत की खोज हुई, तो उँगली सीधे घास छील रहे अवसेरी की ओर उठी।

ज़मींदार और ग्रामीण तुरंत समझ गए कि यह अवसेरी का प्रतिशोध है। उसे तत्काल सादर बुलाया गया। ज़मींदार ने अपनी त्रुटि स्वीकार करते हुए क्षमा याचना की और कहा, "**अवसेरी भाई, ग्राम की कन्या सबकी मर्यादा होती है। यह संकट तुम्हारी वाणी से जन्मा है, अब तुम्हारी बुद्धि ही इस कुल की प्रतिष्ठा की रक्षा कर सकती है।**"

चतुराई से समाधान

अवसेरी को नवीन वस्त्र पहनाकर पूर्ण सम्मान के साथ बारात के समक्ष ले जाया गया। वहाँ पहुँचकर उसने अत्यंत विस्मय के साथ पूछा, "मान्यवरों! आप इस मांगलिक उत्सव को बीच में छोड़कर क्यों लौट रहे हैं?"

बाराती क्रोधित होकर बोले, "तुमने ही तो कहा था कि कन्या के पेट है!"

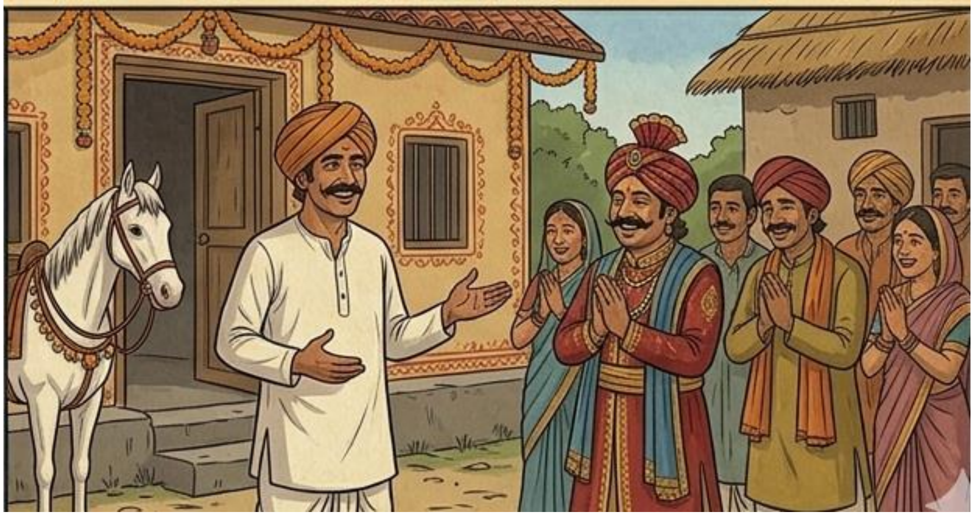

अवसेरी खिलखिलाकर हँसा और बड़ी सादगी से बोला, "**हे श्रेष्ठ जनों! आप इतने विद्वान होकर भी सत्य को समझ न सके? भला इस संसार में ऐसा कौन सा जीव है जिसके 'पेट' (उदर) न हो? यदि कन्या के पेट न होता, तो वह जीवित कैसे रहती? हम सभी के उदर हैं, और उसी की क्षुधा शांत करने के लिए तो यह भोज आयोजित है!**"

अवसेरी के इस वाक्चातुर्य और शब्दों के दोहरे अर्थ को सुनकर बाराती हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। उन्हें अपनी संकीर्ण सोच पर लज्जा आई और वे समझ गए कि अवसेरी ने केवल उनके साथ परिहास किया था। संदेह के बादल छँट गए और बारात पुनः गाजे-बाजे के साथ ज़मींदार की चौखट पर पहुँची।

उपसंहार: अवसेरी ने न केवल अपना सम्मान वापस पाया, बल्कि अपनी बुद्धि के बल पर एक परिवार को घोर अपमान से भी बचा लिया। रसिन ग्राम के इतिहास में यह घटना आज भी इस सीख के साथ दोहराई जाती है कि **शब्द शस्त्र भी हैं और औषधि भी**, यह चलाने वाले की कला पर निर्भर करता है।

6. आस्था की जीत

चित्रकूट के ऐतिहासिक ग्राम **रसिन** में एक समय तीर्थाटन की लहर उठी। ग्रामवासियों ने सामूहिक रूप से देवभूमि की यात्रा का संकल्प लिया। निर्धन किंतु धर्मपरायण ब्राह्मण **अवसेरी** के अंतर्मन में भी देवाधिदेव महादेव के दर्शन की तीव्र अभिलाषा जागृत हुई और वह भी इस पावन जत्थे के साथ निकल पड़ा।

संकल्प और शारीरिक बाधा

यात्रा के प्रारंभिक चरण में ही नियति ने अवसेरी की परीक्षा ली। अभी वे **रौली** ग्राम तक ही पहुँचे थे कि अवसेरी का शरीर व्याधि (बीमारी) से ग्रस्त हो गया। संगी-साथियों ने उसकी जर्जर अवस्था देख परामर्श दिया, "मित्र! मार्ग अत्यंत दुर्गम है और तुम्हारी काया साथ नहीं दे रही। उचित यही है कि तुम ग्राम लौट जाओ और स्वस्थ होने पर पुनः प्रयास करना।"

किंतु अवसेरी का संकल्प वज्र के समान अडिग था। उसने आर्द्र स्वर में, किंतु दृढ़तापूर्वक कहा, "मैने महादेव की शरण ले ली है, अब यहाँ से पग पीछे नहीं हटेंगे। यदि साक्षात मृत्यु भी आ जाए, तो वह इसी पथ पर आए। आप मुझे खटोली (पालकी) में ले चलें, इसका पुण्य आपको प्राप्त होगा। स्मरण रहे, भक्त को मार्ग में छोड़ना शिव को अप्रसन्न करना होगा।"

अवसेरी की श्रद्धा और तर्क के सम्मुख ग्रामवासी नतशिर हो गए। पूरी यात्रा के दौरान श्रद्धावश वे बारी-बारी से उसे अपने कंधों पर उठाकर दुर्गम पहाड़ियों, हिमखंडों और संकरे मार्गों से होते हुए **केदारनाथ** के पावन धाम तक ले गए।

प्रतीक्षा और आत्म-ग्लानि

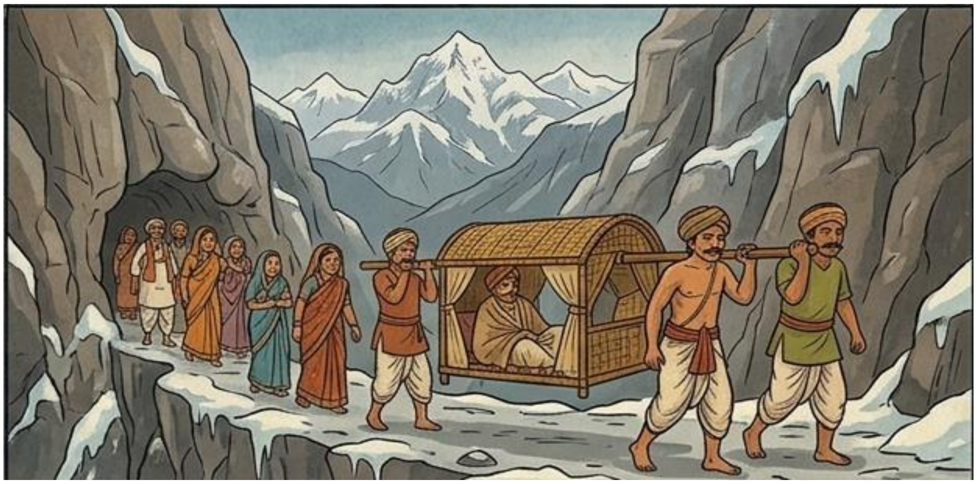

हिमालय की गोद में स्थित केदारनाथ पहुँचकर सभी यात्रियों ने विधिवत पूजन किया और ज्योतिर्लिंग के दर्शन पाकर स्वयं को धन्य माना। किंतु विडंबना देखिए, जिस अवसेरी ने प्राणों की बाजी लगा दी थी, उसे महादेव के साक्षात दर्शन का अनुभव प्राप्त न हुआ। उसका मन विषाद से भर गया। वह मंदिर की देहरी पर सिर रखकर विलाप करने लगा। पंद्रह-बीस दिवस व्यतीत हो गए। ग्रामवासी वापसी की तैयारी करने लगे, किंतु अवसेरी वहीं चौखट पर पड़ा रहा। उसकी प्रार्थना में अब उपालंभ और तार्किकता का पुट था। वह रुदन करते हुए बोला, "*हे नीलकंठ! संसार के समस्त पापी और प्रपंची जनों को आप सहज ही दर्शन दे देते हैं, किंतु मुझ अकिंचन ने यदि सामाजिक लोकलाज तजकर प्रेमवश निम्न कुल की कन्या का वरण कर लिया, तो क्या आप मुझे त्याज्य मानेंगे? आपकी दृष्टि में तो संपूर्ण सृष्टि एकाकार है। जब तक आप साक्षात दर्शन नहीं देंगे, मैं इस देहरी से नहीं उठूँगा। मेरे प्राण इसी चौखट पर विसर्जित होंगे।*
"

दैवीय साक्षात्कार

अवसेरी की निश्छल और हठमयी भक्ति ने अंततः महादेव के सिंहासन को डोलने पर विवश कर दिया। उसी रात्रि मुख्य पुजारी को स्वप्न में महादेव ने दर्शन दिए और आदेश दिया— *"द्वार पर मेरा एक अनन्य भक्त अपनी सुध-बुध खोकर पड़ा है। उसकी अंतरात्मा की पुकार ने मुझे बांध लिया है। उसे ससम्मान अंतर्गृह में लाओ और दर्शन कराओ।"*

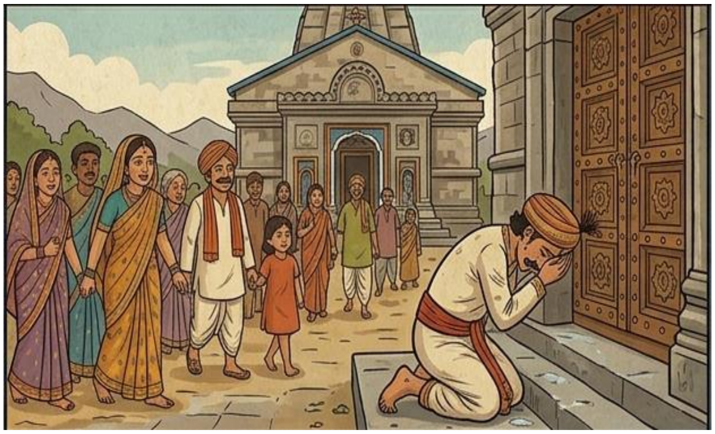

निशीथ काल में, जब मंदिर के पट बंद थे, पुजारी बाहर आए और उस अचेत भक्त के मुख पर शीतल जल के छींटे मारे। चेतना लौटते ही पुजारी ने हर्षित स्वर में कहा, "हे विप्रवर! आप परम सौभाग्यशाली हैं। स्वयं महादेव ने आपकी प्रतीक्षा का अंत किया है।"

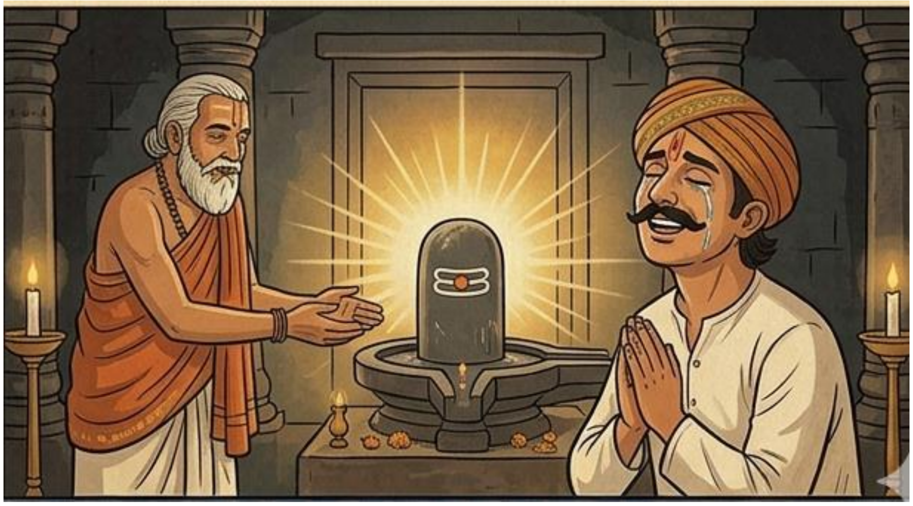

उपसंहार

जब अवसेरी उसी खटोली में पुनः रसिन पहुँचा, तो उसकी मुखाकृति पर एक अपूर्व तेज था। उसकी कथा सुनकर संपूर्ण ग्राम श्रद्धा से भर उठा। लोगों ने स्वीकार किया कि बुद्धि की चतुराई अपनी जगह है, किंतु ईश्वर के द्वार पर केवल **धैर्य** और **अडिग विश्वास** की ही विजय होती है। अवसेरी ने यह सिद्ध कर दिया कि सच्ची आस्था के समक्ष पहाड़ भी झुक जाते हैं और स्वयं ईश्वर को भी भक्त की पुकार सुननी पड़ती है।

7. न हींग लगी न फिटकरी

चित्रकूट के आंचलिक परिवेश में अवसेरी की चतुराई के किस्से आज भी जीवंत हैं। एक बार की बात है, अवसेरी के पड़ोसी गाँव 'औछवाला' में **पीढ़िया** नामक एक ब्राह्मण रहते थे, जिनके पास एक पुष्ट और आकर्षक **पड़वा** (भैंस का बच्चा) था। अवसेरी की पैनी दृष्टि उस पड़वे पर थी।

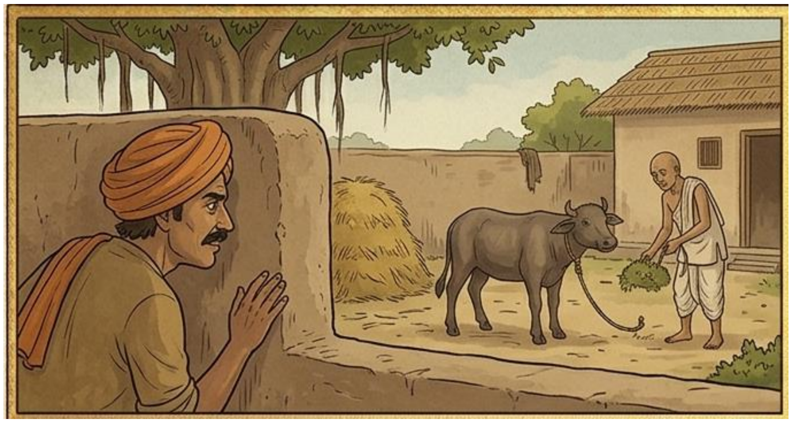

प्रस्ताव और अनुबंध

एक दिन अवसेरी पीढ़िया के पास गया और बड़ी आत्मीयता से बोला, "दादा, मेरे पास गाय-बछड़ों का अभाव है। यदि आप अपना यह पड़वा मुझे सौंप दें, तो मैं इसका पालन-पोषण करूँगा। जब यह पूर्ण रूप से विक्रय योग्य हो जाएगा, तब इसे बेचकर

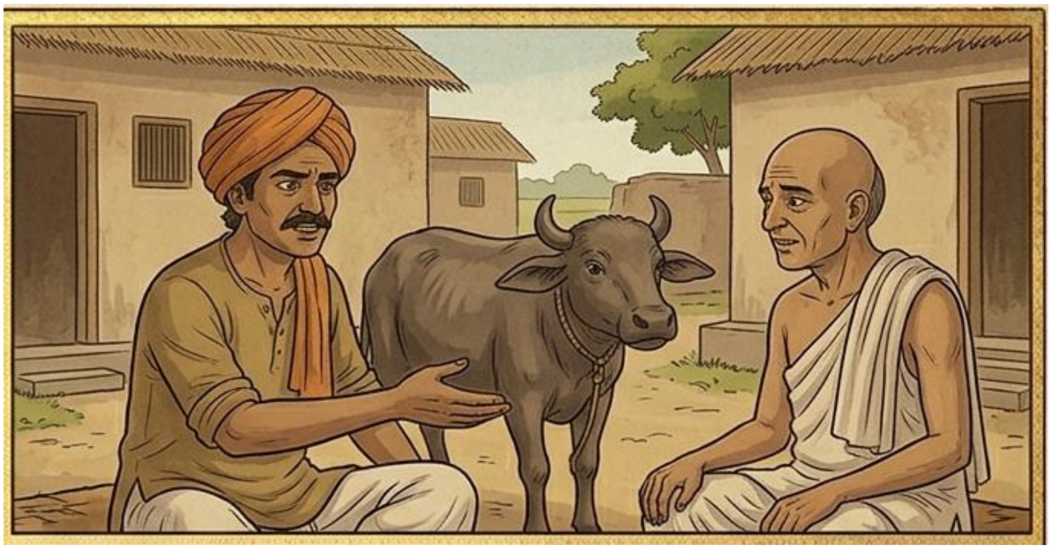

हम होने वाले लाभ को आपस में बाँट लेंगे।"

सरल स्वभाव के पीढ़िया अवसेरी की बातों में आ गए और विश्वास करके अपना पशु उसे सौंप दिया। किंतु अवसेरी की योजना कुछ और ही थी। उसने पड़वे को पालने के बजाय अगले ही दिन उसे **बीस आने** में बेच दिया।

तर्क और परिणाम

लगभग पखवाड़े भर बाद, पीढ़िया उत्सुकता वश अवसेरी के पास पहुँचे और पूछा, "कहो अवसेरी भाई! हमारा पड़वा कैसा है? कुछ हट्टा-कट्टा हुआ या नहीं?"

अवसेरी ने बड़े ही रूखे और नाटकीय लहजे में उत्तर दिया, "अरे दादा! क्या खाक ठीक होगा? उसे तो कसाई ले गए और मारकर खा भी गए। अब जो हो गया सो हो गया, आप अपना धन लीजिए।"

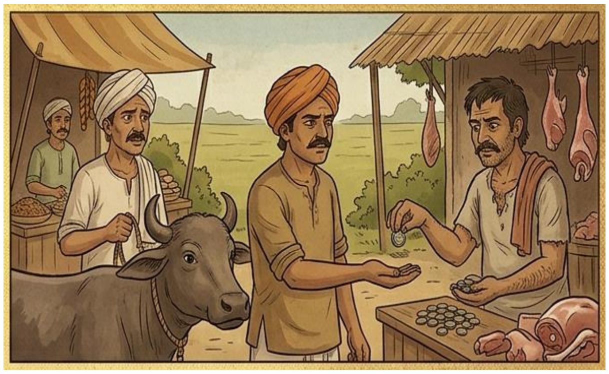

पीढ़िया हतप्रभ रह गए। उन्होंने भारी मन से पूछा, "कितने में बेचा?" अवसेरी ने सहजता से कहा, "बीस आने में। मैंने तो उसे आपके यहाँ से लाने के अगले ही दिन बेच दिया था। पशु का क्या भरोसा, कब बीमार पड़ जाए या मर जाए? हानि उठाने से बेहतर मैंने उसे बेचना ही उचित समझा।"

इसके बाद अवसेरी ने **दस आने** निकालकर पीढ़िया के हाथ पर रख दिए।

चतुराई की पराकाष्ठा

पीढ़िया सिक्कों को देखकर चकित रह गए और बोले, "यह क्या अवसेरी? मात्र एक रात्रि मेरे घर से दूर रहने का मूल्य आधा हो गया? कल तक जो पड़वा मेरा था, आज उसके मूल्य का आधा हिस्सा तुम किस आधार पर रख रहे हो?"

अवसेरी ने कुटिलतापूर्वक हँसते हुए कहा, "**दादा! भूल गए? हमारे बीच 'बटाई' (आधा-आधा साझा) का अनुबंध हुआ था। अनुबंध के अनुसार विक्रय से प्राप्त राशि पर हम दोनों का समान अधिकार है। अतः आधा आपका और आधा मेरा!**"

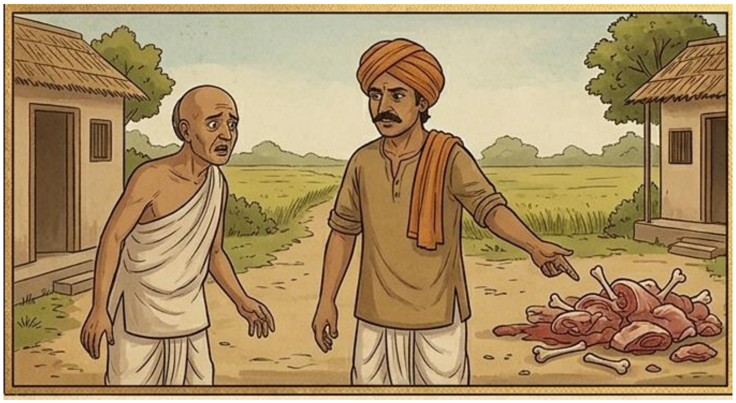

बेचारे पीढ़िया अवाक रह गए। उनके पास अवसेरी के इस कुतर्क का कोई उत्तर न था। बिना एक भी पैसा लगाए और बिना किसी श्रम के, अवसेरी ने केवल अपनी बातों के जाल से एक ही दिन में लाभ का आधा हिस्सा अपना बना लिया।

लोकोक्ति: *"न हींग लगी न फिटकरी और रंग भी चोखा आ गया।"* अवसेरी ने इस कहावत को चरितार्थ कर दिखाया कि चतुर बुद्धि के लिए धन से अधिक तर्क की शक्ति मूल्यवान होती है।

8. अवसेरी का 'कुआँ' संदेश

चित्रकूट के जनमानस में रचे-बसे **अवसेरी** की चपलता और हास्य-बोध के किस्से आज भी जीवंत हैं। एक समय की बात है, अवसेरी ने एक अत्यंत हृष्ट-पुष्ट और आकर्षक बैल क्रय किया। वह बैल अपनी सुंदरता के कारण आकर्षण का केंद्र बन गया था। अवसेरी उसे लेकर जहाँ कहीं भी जाता, राह चलते लोग कौतूहलवश उससे एक ही प्रश्न पूछते—

"भैया, यह अनुपम बैल कितने में खरीदा है?"

अवसेरी धैर्यपूर्वक उत्तर देता— *"भ्राता, यह एक सौ दस रुपये का है।"*

किंतु जिज्ञासा का यह क्रम थमने का नाम नहीं ले रहा था। गाँव के चौक से लेकर खेत की पगडंडियों तक, दिन भर में कम से कम दस-पंद्रह व्यक्ति उससे वही प्रश्न दोहराते।

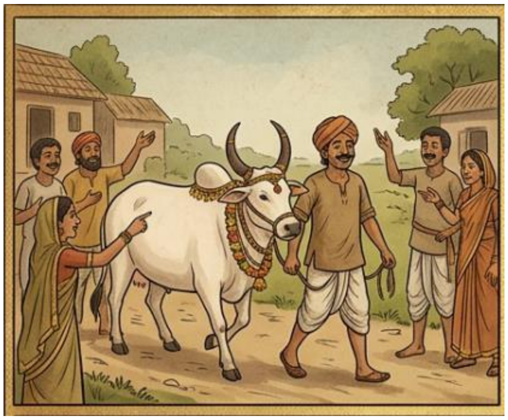

प्रत्येक व्यक्ति को बार-बार एक ही उत्तर देते-देते अवसेरी मानसिक रूप से थक चुका था। अंततः, इस पुनरावृत्ति से मुक्ति पाने के लिए उसने एक विलक्षण युक्ति सोची।

कुएँ से 'आकाशवाणी'

एक दिन वह गाँव के मंदिर के समीप स्थित प्राचीन कुएँ के पास पहुँचा। बिना किसी को बताए, वह कुएँ में कूद गया। सौभाग्य से कुएँ में पहले से ही एक सुदृढ़ जंजीर लटक रही थी, जिसे पकड़कर वह बीच में ही सुरक्षित लटक गया।

जैसे ही गाँव में यह समाचार दावानल की तरह फैला कि *"अवसेरी कुएँ में कूद गया है"*, संपूर्ण ग्रामवासी चिंतामग्न होकर कुएँ की ओर दौड़ पड़े। हर मुख पर एक ही चर्चा थी— *"हाथ! अवसेरी जैसा परोपकारी और मिलनसार व्यक्ति अब इस संसार में नहीं रहा!"*

कुएँ के जगत पर भीड़ एकत्र हो गई। लोग नीचे झाँककर व्याकुलता से चिल्लाने लगे— *"अवसेरी भाई! क्या तुम जीवित हो? तुमने यह आत्मघाती कदम क्यों उठाया?"*

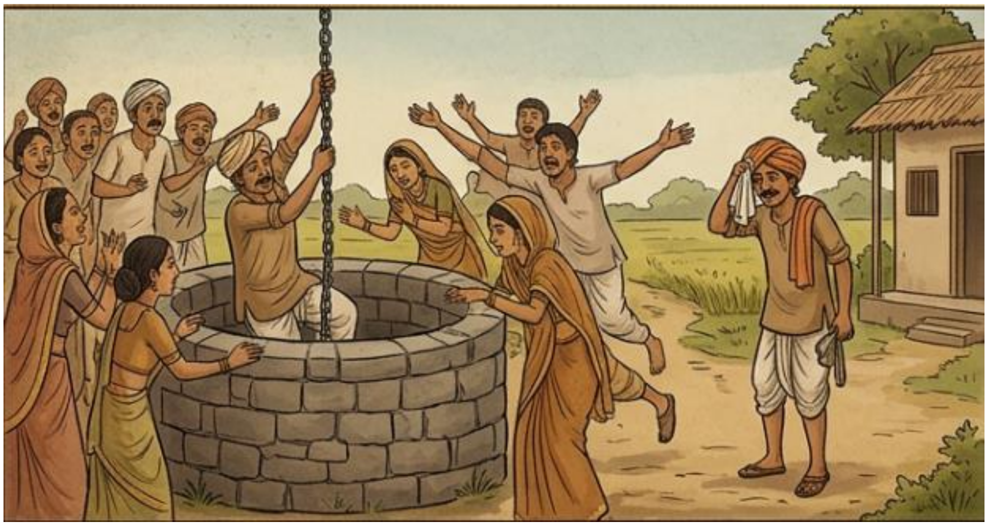

सार्वजनिक घोषणा

भीड़ की व्याकुलता जब चरम पर पहुँच गई, तब कुएँ की गहराई से अवसेरी की गूँजती हुई आवाज़ सुनाई दी— **"हाँ भाइयों, मैं पूर्णतः स्वस्थ और जीवित हूँ!"**

हैरान-परेशान ग्रामीणों ने पूछा— *"तो फिर इस संकट में स्वयं को क्यों डाला?"*

तब अवसेरी ने बड़े शांत भाव से कुएँ के भीतर से अपनी घोषणा की— **"गाँव के समस्त बंधुगणों, ध्यानपूर्वक सुनें! मैं यह बैल 'एक सौ दस' रुपये में खरीदकर लाया हूँ। प्रतिदिन हर व्यक्ति अलग-अलग आकर मुझसे यही मूल्य पूछता है, जिससे मेरी दिनचर्या बाधित होती है। अतः मैंने सोचा कि आज एक साथ सबको**

इस कुएँ के माध्यम से 'कूप-संदेश' दे दूँ, ताकि अब किसी के मन में कोई जिज्ञासा शेष न रहे!"

अवसेरी का यह तर्क सुनते ही ग्रामीणों की चिंता ठहाकों में बदल गई। सब समझ गए कि यह अवसेरी का अपनी अनूठी शैली में लोगों को उनकी अनावश्यक जिज्ञासा का बोध कराने का तरीका था।

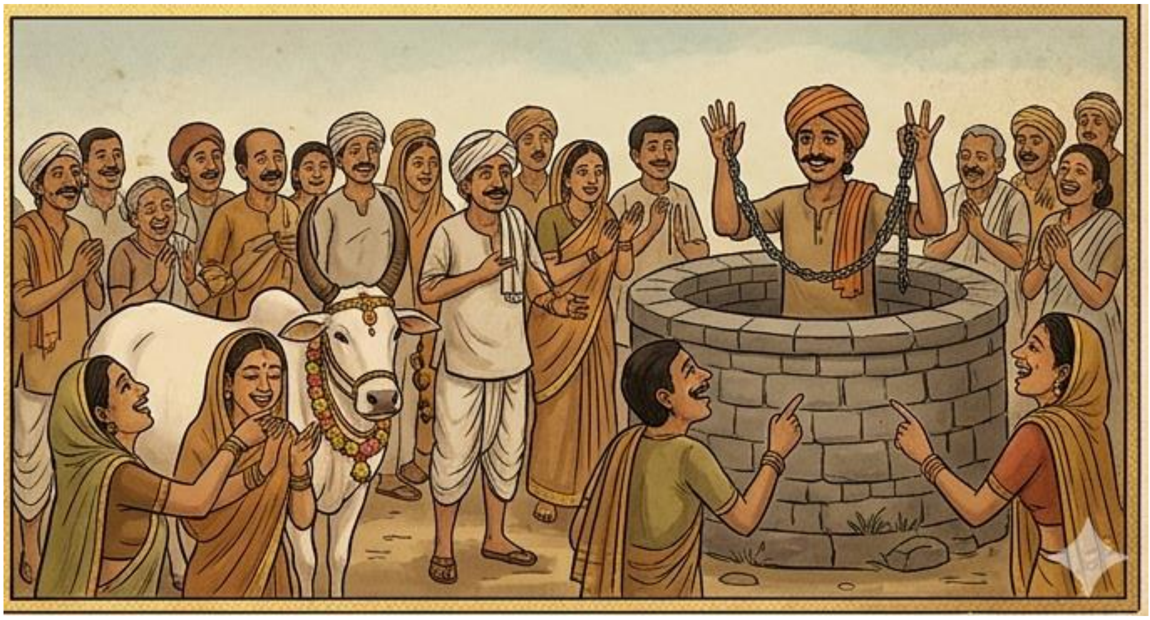

सीख: *बुद्धिमान व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान भी मनोरंजन और हास्य के साथ ढूंढ लेता है।*

9. चुप्पा से दुहना और ठाठ से खाना

चित्रकूट के **रसिन** ग्राम में शुक्ल जी का एक समृद्ध परिवार निवास करता था, जिनके आंगन में अनेक दुधारू गायें और भैंसें बँधी रहती थीं। चूँकि अवसेरी के पास स्वयं का कोई पशु-धन नहीं था, इसलिए जब भी उसकी जिह्वा को दुग्ध-पान की लालसा होती, वह चुपचाप शुक्ल जी के बाड़े में प्रविष्ट हो जाता। वह अपने घर से लोटा या बाल्टी लाता और बड़ी सहजता से किसी भी गाय या भैंस का दूध दुहकर ले जाता।

तर्कपूर्ण निर्लज्जता

एक दिन जब उसे ऐसा करते हुए पकड़ा गया और टोका गया, तो अवसेरी लज्जित होने के स्थान पर उल्टे प्रश्नकर्ता पर ही बरस पड़ा। उसने बड़े अधिकार के साथ कहा:

"क्या तुम्हें तनिक भी लज्जा नहीं आती जो मुझे इस प्रकार रोक रहे हो? क्या तुम यह चाहते हो कि मैं भूख और अभाव में सूखकर अस्थिपंजर हो जाऊँ और मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँ?

तुम स्वयं तो दूध और घी का आनंद लो और मैं सूखी रोटियाँ चबाऊँ? यह कदापि संभव नहीं है। यदि तुम इस गाँव में पशु रखोगे, तो यह निश्चित जान लो कि अवसेरी भी उनके दूध का स्वाद चखेगा।"

स्नेहपूर्ण हठ

अवसेरी का यह तर्क इतना विचित्र किंतु निश्छल था कि टोकने वाला निरुत्तर हो जाता था। वह केवल भोजन या दूध ही नहीं चुराता था, बल्कि वह उन वस्तुओं पर अपना स्वाभाविक अधिकार समझता था। उसकी इस 'जबरदस्ती' में कोई द्वेष नहीं था, बल्कि एक प्रकार का ग्रामीण अपनत्व था।

यही कारण था कि गाँव के लोग उसकी इन हरकतों को उसकी 'विलक्षणता' मानकर अनदेखा कर देते थे। लोग बुरा मानने के बजाय उसकी हाजिरजवाबी पर मुस्कुरा देते थे। अवसेरी का मानना था कि समाज के संसाधन केवल सामर्थ्यवानों के लिए नहीं, बल्कि उन सबके लिए हैं जो उनमें सहभागी बनने का साहस रखते हैं।

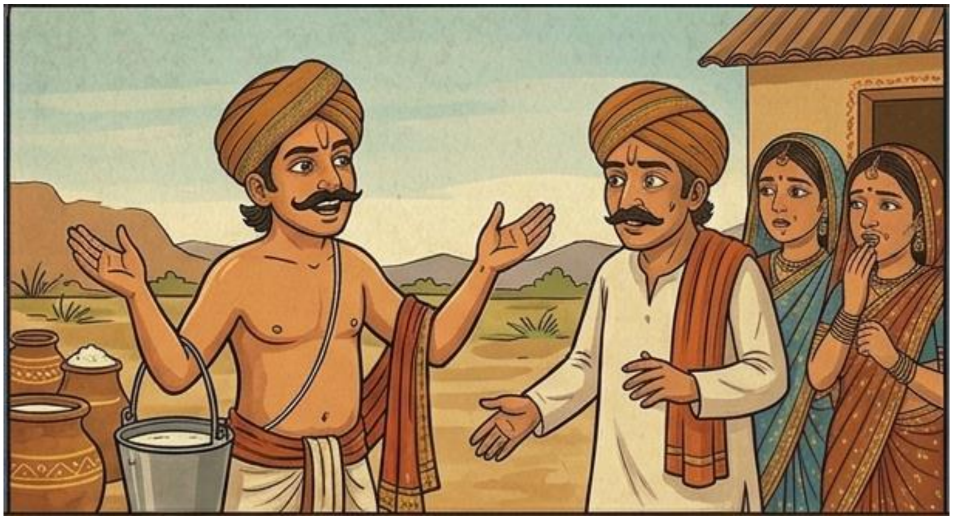

निष्कर्ष: यह प्रसंग हमें बताता है कि अवसेरी केवल चतुर ही नहीं था, बल्कि वह सामाजिक समानता को अपने ही ढंग से लागू करने वाला एक बेपरवाह दार्शनिक भी था।

10. अवसेरी का विवाह और विलक्षण स्नान

यह उस युग की बात है जब मर्यादा और लोक-विनोद ग्रामीण जीवन के अभिन्न अंग थे। चित्रकूट के रसिन ग्राम में जब चपल और प्रत्युत्पन्नमति **अवसेरी** का विवाह निश्चित हुआ, तो संपूर्ण ग्राम में हर्ष और परिहास का वातावरण निर्मित हो गया। चूँकि अवसेरी स्वयं हास्य-विनोद के लिए प्रसिद्ध था, अतः ग्रामीणों ने भी उसे छेड़ने का कोई अवसर हाथ से जाने न दिया।

परिहास की पराकाष्ठा

विवाह की रस्मों के बीच कोई उसकी शिखा (चुटिया) खींचता, तो कोई उसकी दाढ़ी सहलाते हुए व्यंग्य करता। उत्सव के उल्लास में दो ग्रामीण स्त्रियों ने उसे चिढ़ाते हुए कहा, "बाबा! तनिक संभलकर रहिए, कहीं ऐसा न हो कि इस छीना-झपटी में आपकी यह शिखा या दाढ़ी ही जड़ से उखड़ जाए!"

अवसेरी अपनी हाजिरजवाबी के लिए विख्यात था। उसने मुस्कराते हुए प्रत्युत्तर दिया, "**मेरी शिखा का तो कुछ न बिगड़ेगा, तुम अपनी चोटी की चिंता करो कि कहीं वह न बिखर जाए!**" उसके इस निर्भीक उत्तर को सुनकर उपस्थित जनसमूह ठहाकों से गूंज उठा।

तालाब का वह निराला प्रसंग

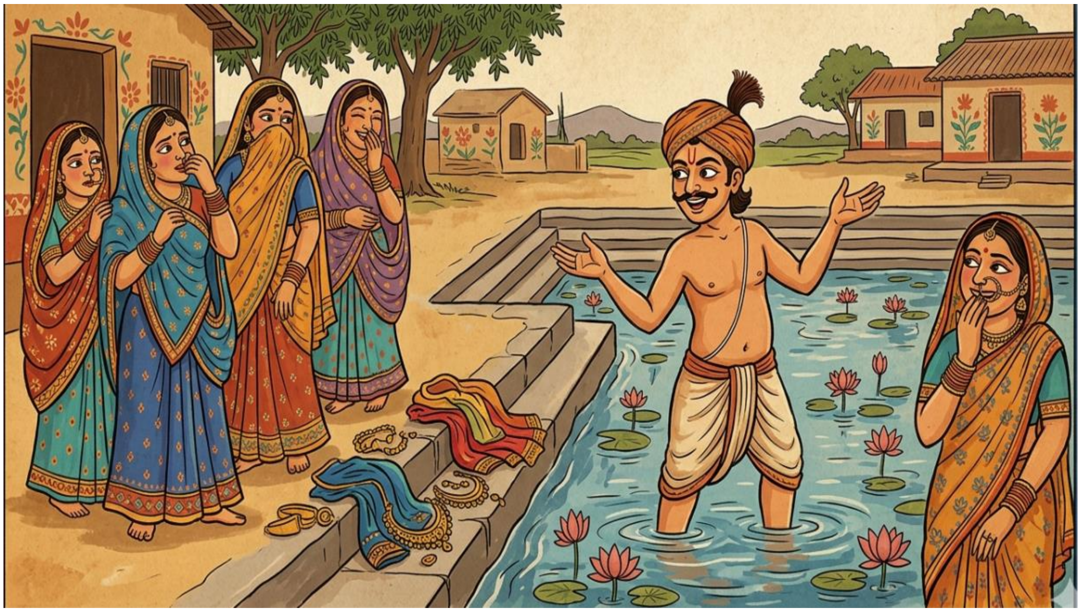

विवाह के शुभ दिन, प्राचीन परंपरा के अनुसार अवसेरी स्नान के निमित्त ग्राम के सरोवर पर गया। उसने अपने आभूषण और वस्त्र तट पर रखे और जल में उतर गया। संयोगवश, वहाँ उपस्थित स्त्रियाँ पुनः उसे परिहास का पात्र बनाने लगीं। वे बार-बार कहने लगीं, "संभलकर स्नान करना दूल्हे राजा! कहीं जल के प्रवाह में आपकी 'चुटिया' ही न बह जाए।"

स्त्रियों के निरंतर उपहास ने अवसेरी के स्वाभिमान को झकझोर दिया। उसने लोक-लाज का परित्याग कर एक दुस्साहसी निर्णय लिया। अपनी मति और सामर्थ्य को सिद्ध

करने के लिए उसने अपनी देह के समस्त वस्त्र त्याग दिए और पूर्णतः निर्वस्त्र होकर दृढ़ता से बोला—

"अब देख लो! मेरी जड़ें कितनी सुदृढ़ और गहरी हैं। अब बताओ, भला मेरी शिखा को उखाड़ने का सामर्थ्य किसमें है?"

अवसेरी का यह दुस्साहसी और अप्रत्याशित रूप देखकर स्त्रियाँ लज्जा से नतमस्तक हो गईं और क्षण भर में ही वहाँ से पलायन कर गईं।

निष्कर्ष

शीघ्र ही यह वृत्तांत संपूर्ण ग्राम में वायु के वेग की भाँति फैल गया। जो ग्रामीण अवसेरी का उपहास कर रहे थे, वे अब उसकी निर्भीकता और अनोखे अंदाज की चर्चा करने लगे। लोग कहने लगे कि अवसेरी केवल वाकपटु ही नहीं, बल्कि सत्य को उसकी नग्न अवस्था में स्वीकार करने वाला एक 'निराला' व्यक्ति है।

उस दिन के पश्चात, अवसेरी के विवाह और उसके उस 'साहसी स्नान' की गाथा रसिन के लोक-इतिहास में सदैव के लिए अंकित हो गई।

11. अवसेरी और भोर का संवाद

वाक्चातुर्य और मर्यादा का द्वंद्व

यह उस युग की बात है जब ऐतिहासिक ग्राम रसिन, बाँदा जिले की नरैनी तहसील के अंतर्गत आता था। उन दिनों आवागमन के आधुनिक साधन सुलभ नहीं थे, इसलिए सुदूर यात्राएं प्रायः पैदल ही तय करनी पड़ती थीं। एक बार अवसेरी को नरैनी तहसील के न्यायालय (कचहरी) में कोई आवश्यक कार्य था। रसिन से नरैनी की दूरी लगभग पाँच-छह कोस (लगभग १५-१८ किलोमीटर) थी। अवसेरी ने मन ही मन विचार किया कि यदि वह भोर की वेला में ही प्रस्थान कर दे, तो कचहरी खुलने के नियत समय पर वहाँ पहुँच जाएगा। इसी उद्देश्य से वह अत्यंत तड़के, जब चारों ओर भोर का धुंधलका था, अपने घर से निकल पड़ा।

भोर की वेला और सामाजिक यथार्थ

उस कालखंड में ग्रामीण क्षेत्रों में घरों के भीतर शौचालयों की व्यवस्था नहीं होती थी। अतः ग्राम की महिलाएँ लोक-लाज और संकोच के कारण सूर्योदय से पूर्व, भोर के अंधेरे में ही नित्य-कर्म के लिए खेतों अथवा सड़क के किनारों की ओर जाती थीं। मर्यादा का नियम यह था कि यदि मार्ग से कोई पुरुष गुजरता दिखाई देता, तो महिलाएँ संकोचवश तुरंत ओट में होने का प्रयास करती थीं या खड़ी हो जाती थीं।

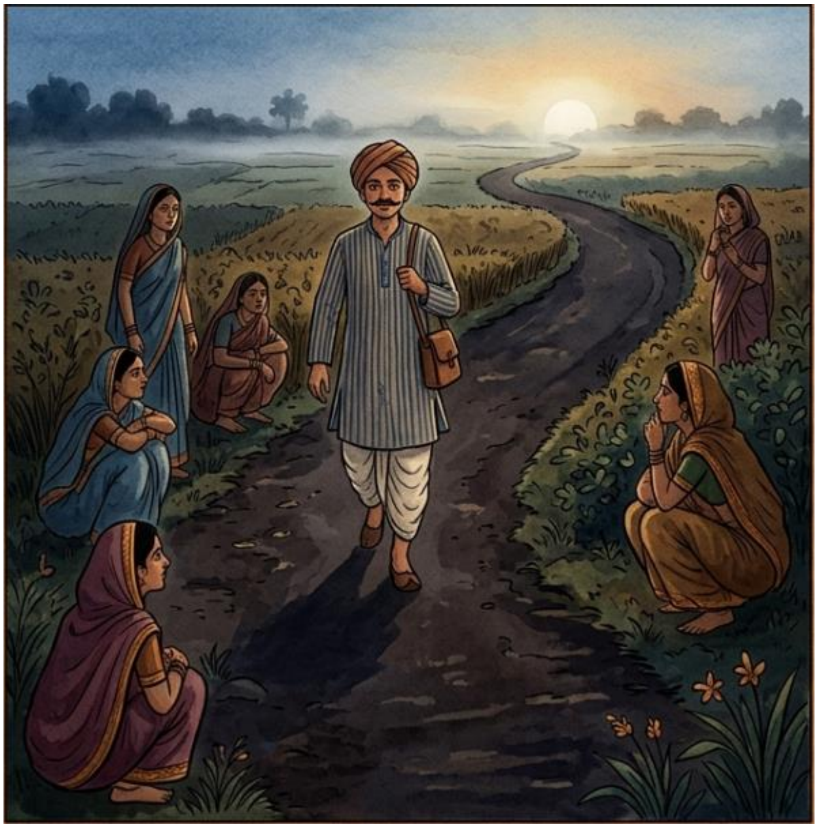

अवसेरी अपनी ही धुन और मस्ती में पगडंडी पर आगे बढ़ रहा था। मार्ग के दोनों ओर कुछ महिलाएँ बैठी थीं, जो दूर से किसी पुरुष की आहट पाकर लोक-लाज के कारण झटपट खड़ी होने लगीं। अवसेरी स्वभाव से चपल

और अत्यधिक विनोदप्रिय था। इस स्थिति को देखकर वह जानबूझकर ज़ोर से बड़बड़ाते हुए बोला: "कैसी फूटी किस्मत है! इतनी कड़कड़ाती सुबह में इतनी दूर पैदल चल रहा हूँ, पर मार्ग ऐसा सूना और रूखा है कि सुबह-सुबह किसी शुभ चीज़ या सुंदर मुखड़े के दर्शन तक न हुए!"

हाजिरजवाबी की पराकाष्ठा

मार्ग के किनारे बैठी महिलाओं में से एक महिला अत्यंत निर्भीक और हाजिरजवाब थी। अवसेरी की यह व्यंग्यात्मक टिप्पणी उसके कानों में पड़ी, तो उसने भी आव देखा न ताव और अवसेरी को उसकी मर्यादा याद दिलाने के लिए पलटकर तीखे स्वर में कहा: "राह चलते राहगीर! यदि राह में तुम्हें किसी का दीदार हो भी गया, तो उससे तुम्हारी

क्षुधा (भूख) शांत हो जाएगी क्या? क्या सुंदर मुखड़ा देख लेने भर से तुम्हें स्वादिष्ट रोटियाँ मिल जाएँगी? व्यर्थ की बातें करने के बजाय अपने मार्ग पर सीधे क्यों नहीं चले जाते?"

अवसेरी तो अपनी प्रत्युत्पन्नमति (तुरंत सटीक जवाब देने की कला) के लिए पूरे अंचल में विख्यात था। उसने तनिक भी समय गंवाए बिना, अत्यंत शांत किंतु चतुरतापूर्ण नाटकीय लहजे में उत्तर दिया: "देवी! आप अन्यथा समझ बैठीं। मेरा आशय केवल रूखी रोटियों से नहीं था। मैं तो कह रहा था कि यदि सुबह-सुबह दर्शन के साथ-साथ आपकी मधुर वाणी की मिठास (शक्कर) भी मिल जाए, तो इस कठिन और लंबी यात्रा का आनंद दोगुना हो जाए। सूखी रोटी के साथ यदि शक्कर का स्वाद मिल जाए, तो दिन बन जाता है!"

अवसेरी के इस अप्रत्याशित, वाक-चातुर्य से भरे और दोहरे अर्थ वाले उत्तर को सुनकर वह महिला पूरी तरह निरुत्तर हो गई। उसे आभास हो गया कि हाजिरजवाबी के युद्ध में इस विलक्षण व्यक्ति को परास्त करना असंभव है। वह अत्यधिक लज्जित होकर तुरंत वहाँ से ओट में हो गई और भविष्य में फिर कभी किसी अपरिचित राहगीर से इस प्रकार तर्क-वितर्क करने का साहस न किया।

उपसंहार: यह प्रसंग इस बात का जीवंत प्रमाण है कि अवसेरी केवल सरल स्वभाव के ही नहीं थे, बल्कि विषम और संकोचपूर्ण स्थितियों में भी अपनी चतुर शब्दावली से सामने वाले का अहंकार पल भर में चूर करने की अद्भुत क्षमता रखते थे।

12. मटकी का रहस्य

यह उस समय की बात है जब ग्रामीण जीवन में दांपत्य कलह और हास्य-विनोद के अनूठे रंग देखने को मिलते थे। एक बार किसी घरेलू बात पर अवसेरी का अपनी धर्मपत्नी से भीषण विवाद हो गया। क्षोभ और अत्यंत क्रोध में आकर उनकी पत्नी अपने मायके चली गईं। पत्नी के जाने से क्षुब्ध और अकेलेपन से खिसियाए अवसेरी ने मन बहलाने के लिए तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था के अनुसार क्षेत्र की एक प्रसिद्ध गणिका (नर्तकी) के आवास की ओर रुख किया।

उस युग में सहजाजपुर के आस-पास के पुरवों (मजरों) में कलावंत और गणिकाएं निवास करती थीं, जहाँ आस-पास के गांवों के रसिक जन अपना मनोरंजन करने जाते थे।

गणिका की मांग और अवसेरी की युक्ति

जब अवसेरी उस गणिका (जिसका नाम तेजनिया था) के समीप पहुँचा, तो उसने अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुछ मुद्राएं उसके सम्मुख रखीं। चूँकि उस दौर में धन का मूल्य बहुत अधिक था, इसलिए अवसेरी को लगा कि यह पर्याप्त है। किंतु तेजनिया उन सीमित मुद्राओं से संतुष्ट नहीं हुई। उसने अवसेरी के ग्रामीण परिवेश को देखकर व्यंग्य किया: "अरे भले मानस! इन चंद सिक्कों से कुछ नहीं होने वाला। तुम तो ग्रामीण हो, तुम्हारे पास गाय-भैंस जैसे पशु-धन की क्या कमी? घर में पर्याप्त दूध और घी होता ही होगा!"

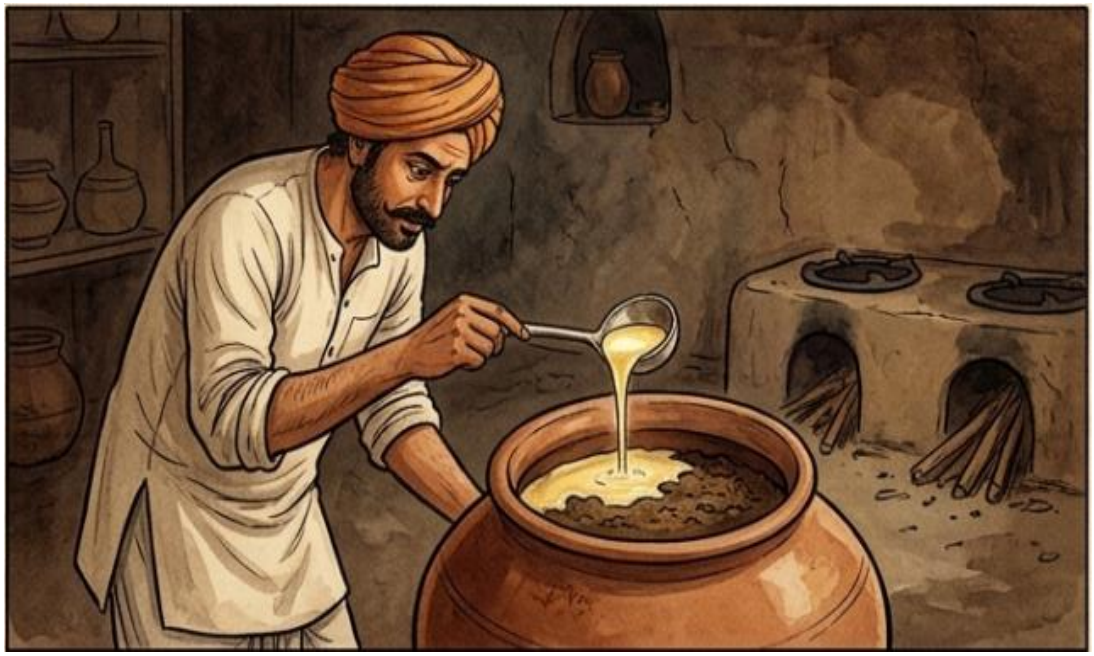

अवसेरी ने तुरंत हामी भरते हुए कहा, "हाँ, दूध और घी की तो कोई कमी नहीं है।"

तेजनिया ने अपनी शर्त रखते हुए कहा, "ठीक है, फिर यदि तुम मेरे लिए एक मटकी शुद्ध देसी घी ले आओ, तो महफ़िल का आनंद लिया जा सकता है।"

यह सुनते ही अवसेरी तुरंत घी का प्रबंध करने के लिए अपने गाँव की ओर दौड़ा। वह स्वभाव से अत्यंत चतुर और कुशाग्र बुद्धि का स्वामी था। उसने घर आकर एक सुंदर मटकी ली। उसने मटकी के निचले और मध्य भाग में ठोस एवं साफ़ मिट्टी भर दी और उसके ठीक ऊपर पाव भर भैंस का शुद्ध घी उड़ेल दिया। मटकी ऊपर से पूरी तरह चकाचक और शुद्ध घी से भरी दिखाई देने लगी।

शीत ऋतु का समय होने के कारण वह घी मटकी के मुख पर पूरी तरह से जम गया। चूँकि वह घर के चूल्हे पर पकाया हुआ शुद्ध घी था, इसलिए उसकी सुगंध चारों ओर फैलने लगी।

सुगंध का आकर्षण और भेद खुलना

अवसेरी वह मटकी लेकर पुनः तेजनिया के पास पहुँचा और गर्व से बोला, "यह देखो, तुम्हारी इच्छा के अनुसार साक्षात अमृत जैसा शुद्ध घी लाया हूँ। इसकी सुगंध ही इसकी शुद्धता का प्रमाण है।"

तेजनिया मटकी देखकर और उसकी सुगंध से अत्यंत प्रसन्न हुई। उसने कहा, "वाह! घी तो सचमुच उत्तम प्रतीत होता है। तुम ऐसा करो, इसे अंदर ले जाकर मेरी बहन (द्विजनिया) को सौंप आओ।"

अवसेरी ने मटकी अंदर रख दी और तेजनिया के साथ महफ़िल का आनंद लेने लगा। इधर अंदर बैठी द्विजनिया से घी की सोंधी महक के कारण रहा न गया। उसने उत्सुकतावश मटकी का ढक्कन खोला और घी का स्वाद चखने लगी। जैसे ही उसने ऊपर की जमी हुई परत को थोड़ा खोदा, उसे नीचे केवल सूखी मिट्टी दिखाई दी।

धोखे का अहसास होते ही वह भीतर से चीख उठी, "अरी तेजनिया! जल्दी आओ और सब कुछ समेटो! हमारे साथ बहुत बड़ा छल हुआ है। इस मटकी में तो केवल मिट्टी भरी है! ऊपर-ऊपर दिखाने के लिए केवल घी की एक पतली परत लगाई गई थी!"

उसकी बात सुनकर तेजनिया हतप्रभ रह गई और सिर पकड़कर विलाप करते हुए बोली, "हाय दैया! अब सब कुछ समेटने से क्या लाभ? जो खेल होना था, वह तो हो

चुका। महफ़िल का समापन हो गया और हमारा मेहमान तो अपनी चतुर कला दिखा चुका!"

तब तक अवसेरी अपनी विलक्षण बुद्धि के बल पर अपना काम सिद्ध करके वहाँ से मुस्कुराते हुए विदा हो चुका था और चतुर कहलाने वाली गणिकाएं हाथ मलती रह गईं।

उपसंहार: यह प्रसंग यह सिद्ध करता है कि अवसेरी को अपनी चतुर युक्तियों से किसी को भी भ्रमित करने में महारत हासिल थी। उन्होंने बिना किसी आर्थिक क्षति के अपनी तात्कालिक इच्छा भी पूर्ण की और अपनी हाजिरजवाबी से सामने वाले के लालच का करारा उत्तर भी दिया।

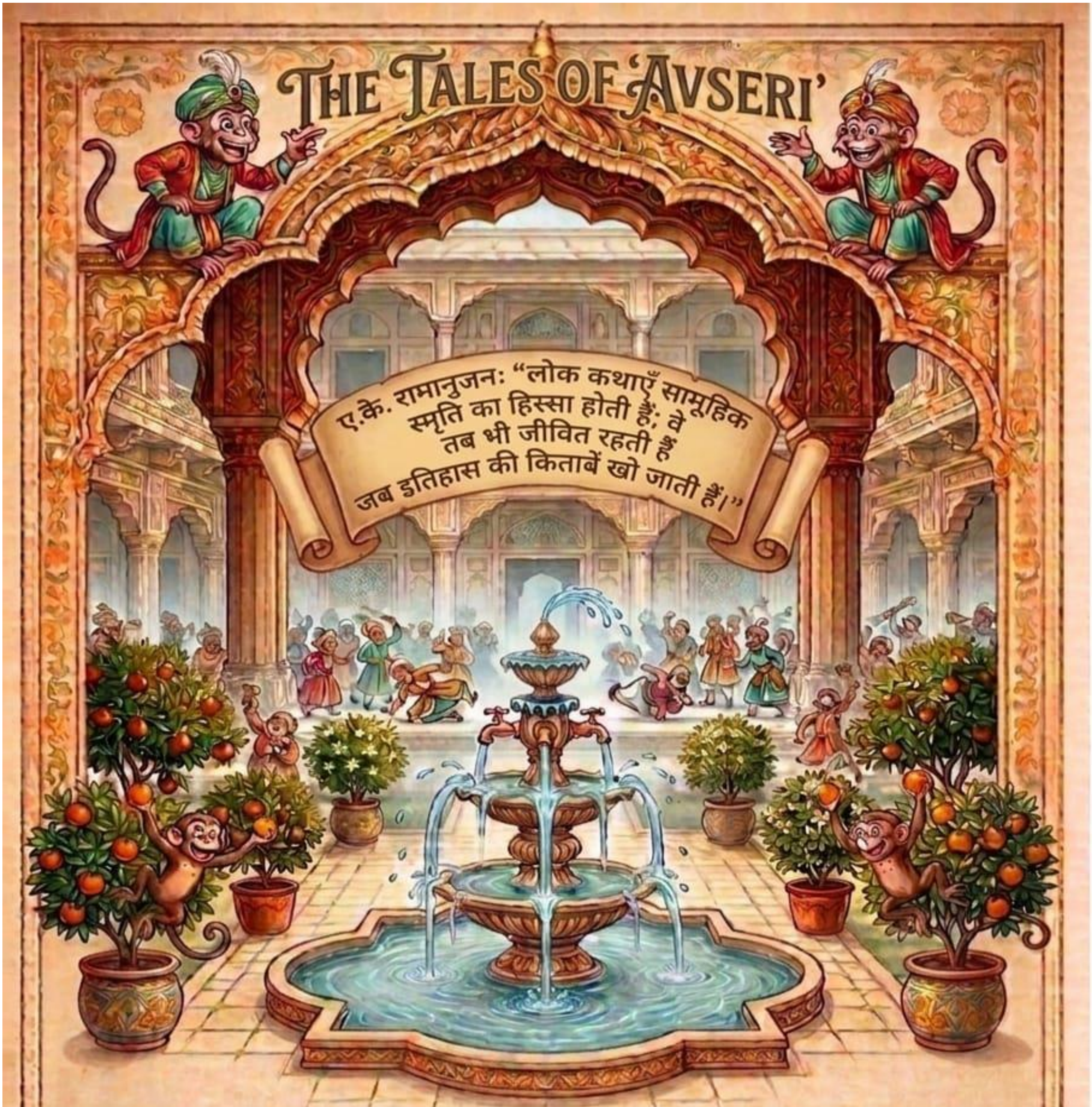

ISBN: 978-9-35890-323-2
9 789358 903232